सहेली के भाई ने दीदी की बुर चोदी-4

“दीदी ने अपना सलवार सूट उतार दिया. मैंने पीछे से देखा कि मेरी जवान दीदी की गांड ऐसी लग रही थी कि मानो उनकी पेंटी को फाड़ कर बाहर निकल आएगी. …”

Story By: (gautamkumar)
Posted: Sunday, October 6th, 2019
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: सहेली के भाई ने दीदी की बुर चोदी-4

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

सहेली के भाई ने दीदी की बुर चोदी-4

 यह कहानी सुनें

आपने अब तक की मेरी इस सेक्स कहानी में पढ़ा कि दीदी को उनकी सहेली श्वेता ने कहा कि साकेत भैया उनसे अकेले में मिलना चाह रहे थे.

अब आगे :

श्वेता दीदी- ये मुझे नहीं पता … हो सकता है उन्हें तुमसे कुछ बात करनी हो. क्या कहती हो ?
दीदी- मैंने तो उनसे बोला था कि जो भी बोलना हो, आप लैटर में लिख कर बोल दीजियेगा. मैं उसका रिप्लाई दे दूँगी.
श्वेता दीदी- हो सकता है उन्हें तुमसे कुछ मिलकर ही बोलना हो.
दीदी- उन्हें बोल देना, जो भी उन्हें बोलना हो, वो मुझे लैटर में लिख कर दे दें, मैं उनका जवाब दे दूंगी. मैं मिलने कहीं नहीं आऊंगी.
श्वेता दीदी- ठीक है … मैं बोल दूँगी. लेकिन तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, वो तुम्हारे बारे में हमेशा सोचते रहते हैं. मुझसे हर समय तुम्हारे बारे में ही पूछते रहते हैं … और एक तुम हो कि उनके बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचती हो.

श्वेता दीदी दीदी को इमोशनल तरीके से ब्लैकमैल करने लगी.
तभी दीदी कुछ देर सोचने के बाद बोली- कब मिलना है ?
श्वेता दीदी- ऐसे तो वो आज बोल रहे थे … तुम कब कहती हो.
दीदी- कहां ?
श्वेता दीदी- तुम्हारे घर पर.

दीदी- क्या ? तुम पागल हो क्या ?
श्वेता दीदी- क्यों क्या दिक्कत है ?
दीदी- किसी ने देख लिया, तो क्या होगा है … पता भी है तुम्हें ?
श्वेता दीदी- अरे वो दिन में थोड़ी ना आएंगे … वो तो रात में आएंगे.

दीदी- नहीं … नहीं. अगर उनको मिलना है तो उसी होटल में मिल सकते हैं, जहां पिछली बार मिले थे.
श्वेता दीदी- ऐसे तो वो घर पर ही बोल रहे थे … पर मैं उनसे बोल दूंगी.
दीदी- ठीक है, अगर वो होटल में मिलना चाहते हैं, तो मैं आ सकती हूँ.
श्वेता दीदी- ठीक है, अगर वो बोलेंगे, तो चलोगी ना.
दीदी- हां.

अब तक हम लोग घर पहुंच गए थे. श्वेता दीदी भी अपने घर चली गई.

लगभग एक घंटे बाद श्वेता दीदी फिर मेरे घर आई. श्वेता दीदी मेरी दीदी से बात करने लगी.

श्वेता दीदी- प्रिया, खाना खा लिया.
दीदी- हां.
श्वेता दीदी- मम्मी को फोन किया … वे लोग पहुंचे कि नहीं ?
दीदी- हां, मम्मी से बात हो गई. वे लोग पहुंच गए.
श्वेता दीदी- आंटी डॉक्टर के यहां कब जाएंगी ?
दीदी- पता नहीं … हो सकता है कल जाएं.
श्वेता दीदी- ओके … चलो अर्णव, हम लोग लूडो खेलते हैं.
मैं- हां … दीदी चलो.
दीदी- श्वेता … वो क्या बोले ?

श्वेता दीदी- कुछ नहीं.
दीदी- कुछ नहीं मतलब !
श्वेता दीदी- वो बोले हम होटल में नहीं मिलेंगे … अगर मिलना हो तो घर बुलाओगी, तब ही मिलेंगे.

दीदी कुछ नहीं बोली. दोनों एक दूसरे को देखने लगीं. कुछ देर बाद दीदी बोली.

दीदी- ये कोई बात थोड़ी ना हुई. होटल में मिलने में क्या दिक्कत है.
श्वेता दीदी- तुम्हें घर में क्या दिक्कत है ?
दीदी- कोई ने देख लिया … तब क्या होगा. खामखा का हंगामा हो जाएगा. अरे जब उनको बात ही करनी है, तो कहीं भी कर सकते हैं … घर में ही क्या जरूरी है ?
श्वेता दीदी- तुम इसलिए डर रही हो ना कि कोई देख लेगा … तो वो तुम मुझ पर छोड़ दो.
दीदी- और अर्णव ?
श्वेता दीदी- अरे वो रात में आएंगे, तब तक अर्णव सो भी जाएगा. वो 1-2 घंटे रहेंगे … फिर चले भी जाएंगे, किसी को कुछ पता नहीं चलेगा. बोल क्या बोलती हो.
दीदी- क्या बोलूं यार … मुझे तो बहुत डर लग रहा है.
श्वेता दीदी- अरे डर क्यों रही हो … तुम सब मुझ पर छोड़ दो.

कुछ देर सोचने के बाद दीदी बोली.

दीदी- ठीक है … पर कोई प्रॉब्लम नहीं होना चाहिए.
श्वेता दीदी- कोई प्रॉब्लम नहीं होगी.

उन्हें लग रहा था कि मैं उनकी बातें नहीं सुन रहा हूँ, पर मैं उनकी सारी बातें सुन रहा था. अब उन दोनों के बीच रात में मिलने की बात तय हो गई थी. उस वक़्त मैं बहुत एक्साइटेड

हो रहा था. मुझे लग रहा था कि बस कब रात हो.

शाम हो गई. श्वेता दीदी अपने घर चली गई और अब थोड़ा ज्यादा अंधेरा हो गया था. दीदी जल्दी जल्दी खाना बनाने लगी. तब सब कुछ जानते हुए भी मैंने दीदी से पूछा- दीदी क्या बात है आज बहुत पहले खाना बना रही हो ?
दीदी- हां … आज मैं बहुत थक गई हूं.
मैं- तो !
दीदी- तो … तू जल्दी से खाना खा कर सो जा … सुबह जल्दी जागना भी है.
मैं- ठीक है … आज श्वेता दीदी नहीं आएगी क्या ?
दीदी- आएगी.

कुछ देर खाना बन गया … तो दीदी मुझसे बोली- खाना खा लो.
मैं- हां दे दो.
दीदी ने मुझे खाना निकाल कर दिया और मैं खाने लगा.

तभी श्वेता दीदी भी आ गई. मैंने श्वेता दीदी से बोला- दीदी आपने खाना खा लिया ?
श्वेता दीदी- हां … मैंने खा लिया.
यूं ही बातें करते करते मैंने भी खाना खा लिया.

खाना खाने के बाद मैंने दीदी से बोला- दीदी मुझे नींद आ रही है … मैं सोने जा रहा हूँ.
दीदी- ठीक है … तुम आज श्वेता दीदी के साथ सो जाओ.
मैंने कुछ सोचा और बोला- नहीं मुझे वहां नींद नहीं आती … मैं अकेले सोऊंगा.
श्वेता दीदी बोली- ठीक है कोई बात नहीं है तुम जाकर सो जाओ.

मैंने अपने कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर लिया और बेड पर लेट कर साकेत भैया के आने का इंतजार करने लगा.

लगभग डेढ़ दो घंटे बाद श्वेता दीदी मेरे कमरे के पास आकर मुझे आवाज देने लगी, पर मैं कुछ नहीं बोला.

दीदी ने मुझे दो तीन बार आवाज लगाई. मैं फिर भी कुछ नहीं बोला. उन्हें लगा कि मैं सो गया हूँ.

फिर दीदी और श्वेता दीदी अपने कमरे में चली गईं. श्वेता दीदी ने अपना मोबाइल निकाला और किसी को फोन करने लगी.

श्वेता दीदी- हैलो … भैया … कहां हैं आप ?

उधर की आवाज मुझे सुनाई नहीं दे रही थी … लेकिन मुझे लगा कि वो साकेत भैया को ही फोन कर रही थी.

श्वेता दीदी- हां जल्दी आ जाइए.
उधर से कुछ कहा गया.
श्वेता दीदी- हां … अर्णव सो गया.
उधर से कुछ कहा गया.
श्वेता दीदी- कोई दिक्कत नहीं है, दस मिनट बाद … अच्छा ठीक है.

श्वेता दीदी ने फोन कॉल कट कर दी और बोली- वो 10 मिनट में आ जाएंगे.

उस समय लगभग 10 बज रहा था.

दीदी- क्या पहनूं ?
श्वेता दीदी- वो तुम्हें स्कूल ड्रेस पहनने बोल रहे थे. वो बोल रहे थे कि तुम स्कूल ड्रेस में अच्छी लगती हो.

दीदी- पागल हो … स्कूल ड्रेस में नीचे पूरा दिखता है … मैं सूट पहन लेती हूं.

फिर श्वेता दीदी दीदी को छेड़ते हुए बोली- ऐसे भी तो सब खोलना ही पड़ेगा … कुछ भी पहन लो.
दीदी- क्या ? मतलब क्या खोलना ही पड़ेगा.
श्वेता दीदी- अरे कुछ नहीं यार … वो स्कूल ड्रेस की बोल रहे हैं, तो वही पहन लो न.

कुछ देर सोचने के बाद दीदी ने अलमारी से स्कूल ड्रेस निकाली और श्वेता दीदी से बोली- श्वेता तुम थोड़ा बाहर जाओ … मैं इसे चेंज कर लूं.

श्वेता दीदी- अरे मेरे सामने कपड़े बदली करने में क्या दिक्कत है ?
दीदी- नहीं … मुझे शर्म आ रही है.
श्वेता दीदी- ठीक है.

वो बाहर चली आई. दीदी ने अपना सलवार सूट, जो अभी पहना था, उसे उतार दिया. बस फिर क्या था. वही बड़ी बड़ी पिछाड़ी और उनमें छिपी हुई दीदी की गांड ऐसी लग रही थी कि मानो उनके जांघिए को फाड़ कर बाहर निकल आएगी. दीदी की बड़ी बड़ी गोल गोल चूचियां भी ब्रा से थोड़ा थोड़ा बाहर दिख रही थीं. मैं उसे देख कर उसके अन्दर की चीजों को देखने के लिए बहुत उतावला हो रहा था.

फिर दीदी ने जल्दी से अपनी ड्रेस बदल ली. दीदी वास्तविक में ड्रेस में बहुत हॉट लग रही थी.

दीदी ने श्वेता दीदी को धीरे से आवाज दी … ताकि मैं जाग ना जाऊं.

श्वेता दीदी- प्रिया … यार सच में ड्रेस में तुम बहुत मस्त दिखती हो. भैया आते ही होंगे.
दीदी- अर्णव जागा तो नहीं होगा ना ! मुझे बहुत डर लग रहा है.

श्वेता दीदी- अरे डर क्यों रही हो. तब भी मैं उसे देख लेती हूं.

फिर श्वेता दीदी ने मेरे कमरे के पास आ कर मुझे आवाज दी- अर्णव. … अर्णव.
मैं कुछ नहीं बोला.
'अर्णव.. … अर्णव..'
मैं फिर भी कुछ नहीं बोला.
उसके बाद वो चली गई.

श्वेता दीदी- अरे वो सो गया … वो नहीं जागेगा.
कुछ देर बाद फोन बजा.
श्वेता दीदी- हैलो … हां आप कहां हैं ?
उधर से कुछ कहा गया.
श्वेता दीदी- अच्छा ठीक … मैं खोल रही हूं.

कॉल कट दो गई और वो दीदी से बोली- वो दरवाजे पर हैं, मैं उन्हें अन्दर लेकर आती हूं.
दीदी श्वेता दीदी का हाथ पकड़ते हुए बोली- श्वेता … पता नहीं क्यों मुझे बहुत डर लग रहा है.
श्वेता दीदी- अरे … पागल डर क्यों रही हो … मैं हूं ना ! पहले तुम रिलैक्स हो जाओ.

श्वेता दीदी दरवाजा खोलने के लिए जाने लगी. तभी दीदी बोली- श्वेता … दरवाजा धीरे से खोलना.
श्वेता दीदी- ठीक है … तुम टेंशन मत लो.

वो चली गई. दरवाजा खोल कर वो उन्हें अन्दर लेकर आ गई. तब तक दीदी ने अपना दरवाजा बंद कर लिया.

श्वेता दीदी बोली- अरे प्रिया क्या हुआ … दरवाजा खोलो.
दीदी कुछ नहीं बोली.
श्वेता दीदी- अरे खोलो ना … डर क्यों रही हो.

दीदी ने दरवाजा खोला और वो दोनों अन्दर चले गए.
श्वेता दीदी बोली- अरे क्या हुआ तुम इतना घबरा क्यों रही हो.
दीदी कुछ नहीं बोली.

साकेत भैया- अरे तुम इतना डर क्यों रही हो … हम तो पहले भी मिल चुके हैं न.
दीदी- आप बैठिए ना.

साकेत भैया पलंग पर बैठ गए. श्वेता दीदी भी उनके साथ बैठ गई, पर दीदी खड़ी थी.
साकेत भैया बोले- तुम क्यों खड़ी हो … तुम भी बैठ जाओ.

फिर दीदी श्वेता दीदी से चिपक कर बैठ गई.

मुझे ऐसा लग रहा था कि दीदी बहुत डरी सहमी थी. वो आपस में इधर उधर की बातें करने लगे.
कुछ देर बातें करने के बाद श्वेता दीदी बोली- ठीक है आप दोनों बातें कीजिए … मैं सोने जा रही हूं.

तभी दीदी ने श्वेता दीदी का हाथ पकड़ लिया और बोली- तुम कहां जा रही हो … बैठी रहो ना.
साकेत भैया- अरे उसे जाने दो. उसे नींद आ रही है.
श्वेता दीदी- अरे … तुम बात करो … मैं यहीं पास में ही हूं ना … कोई दिक्कत नहीं होगी.

वो इतना बोल कर मम्मी के कमरे में चली गई. साकेत भैया ने उठ कर कमरे का दरवाजा

बंद कर लिया. वो दीदी से बातें करने लगे.

साकेत भैया- और बताओ ?
दीदी कुछ नहीं बोली, वो बिल्कुल से घबराई हुई थी.
साकेत भैया- क्या हुआ … कुछ तो बोलो.
दीदी- आप बोलिए … आप ही मिलने के लिए परेशान थे.
साकेत भैया- हां … वो तो था.

इसी तरह दोनों कुछ देर तक बातें करते रहे. मैंने देखा वो धीरे धीरे दीदी के पास को चले गए और अपना एक हाथ दीदी के जांघ पर रख दिया. दीदी ने उनका हाथ वहां से हटा दिया.

उन्होंने अपना हाथ फिर से दीदी की जांघ पर रख दिया और सहलाने लगे. एक दो बार दीदी ने इसी तरह उनका विरोध किया, उसके बाद दीदी ने उनका विरोध करना बंद कर दिया.

अब साकेत भैया ने अपना हाथ धीरे धीरे दीदी की स्कर्ट के अन्दर दोनों पैरों के बीच में घुसा दिया और अपना हाथ हिलाने लगे.
थोड़ी देर तक तो दीदी शांत रही, फिर अचानक उनका हाथ पकड़ कर बाहर की ओर खींचकर बोली- क्या कर रहे हो साकेत … ये सब गलत है … आपको तो सिर्फ बात करनी थी न.
साकेत भैया- बात तो हो गई ना … अब थोड़ा प्यार भी तो कर लें.
दीदी- नहीं, ऐसा मत कीजिए.

फिर बातें करते करते साकेत भैया ने अपना हाथ दीदी की स्कर्ट के अन्दर दोनों पैरों के बीच घुसा दिया और अपना हाथ हिलाने लगे.

दीदी के एक दो बार इंकार किया, उसके बाद वो शांत हो गई. शायद अब दीदी को भी मज़ा आने लगा था, वो भी आंखें बंद करके मजा लेने लगी थी. पता नहीं मुझे ये सब देख बहुत मजा क्यों आ रहा था और मेरा लंड भी बिल्कुल अंडरवियर में तम्बू बनाए था. मैं भी अपना पैंट खोल कर लंड सहलाने लगा.

उसी समय साकेत भैया ने दीदी के स्कर्ट को थोड़ा ऊपर किया. तभी मुझे दीदी की पैंटी दिख गई. इस समय दीदी व्हाईट रंग की पैंटी पहने हुए थी … लेकिन मुझे पैंटी के अन्दर की चीजें देखने की बेताबी हो रही थी … क्योंकि ऊपर से तो मैंने दीदी की गांड और चूचियों को कई बार देखा था.

तभी दीदी ने उनका हाथ बाहर की ओर खींचा और उठ कर खड़ी हो गई.

तब साकेत भैया बोले- क्या हुआ प्रिया ?
दीदी- कुछ नहीं.
साकेत भैया- कहां जा रही हो ?

दीदी कुछ भी नहीं बोली, वो दरवाजे की तरफ बढ़ी, तभी साकेत भैया ने दीदी का हाथ पकड़ लिया और बोले- क्या हुआ … प्रिया कहां जा रही हो ?
दीदी फिर भी कुछ नहीं बोली.

मेरी दीदी की सेक्स कहानी आपको कैसी लग रही है ? मेरी इस सेक्स कहानी के लिए आपके मेल की प्रतीक्षा रहेगी.
gautamkumar8892@gmail.com

कहानी जारी है.

Other stories you may be interested in

सहेली के भाई ने दीदी की बुर चोदी-2

आपने अब तक की मेरी इस दीदी का बुर चोदन सेक्स कहानी में पढ़ा था कि मेरी दीदी से साकेत भैया अपना चक्कर चलाने लगे थे और उन्होंने एक अपनी बहन के हाथों मेरी दीदी के पास अपना प्रेम पत्र […]
Full Story >>>

सहेली के भाई ने दीदी की बुर चोदी-1

यह सेक्सी कहानी मेरी बड़ी बहन की बुर चोदी की है. मेरा नाम अर्णव है. मैं अपनी मम्मी और बड़ी बहन के साथ रहता हूं. मेरे पापा दिल्ली में रहते हैं. मेरी बहन का नाम प्रिया है. वो बहुत खूबसूरत […]
Full Story >>>

जीजा ने मुझे रंडी बना दिया-2

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा था कि मैंने अपनी मां से अपने बॉयफ्रेंड और मेरी शादी के बारे में बात की थी लेकिन मां ने मना कर दिया. जब मैंने इस बारे में अपने बॉयफ्रेंड आशीष से बात […]
Full Story >>>

शरीफ चाची को अपना लंड दिखा कर चोदा-1

दोस्तो … मेरा नाम दीपक सोनी है. मेरी उम्र 23 साल, हाईट 5 फुट 11 इंच है और रंग गोरा है. मैं दिखने में सुंदर हूं और हरियाणा का रहने वाला हूं. मेरे लंड की लम्बाई 6 इंच है और […]
Full Story >>>

गाँव की भाभी को खेत में चोदा

दोस्तो, मैं राजवीर सिंह दोबारा से अपनी नई गाँव की भाभी सेक्स कहानी के साथ आपके सामने हाजिर हूँ. आपने मेरी कहानी गाँव की भाभी की चूत की चुदाई पढ़ी, मुझे सुझाव दिए, उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद. आप अपना […]
Full Story >>>